# ममता

## जयशंकर प्रसाद

कक्षा -10 (हिंदी)

UP BOARD EXAM 2022

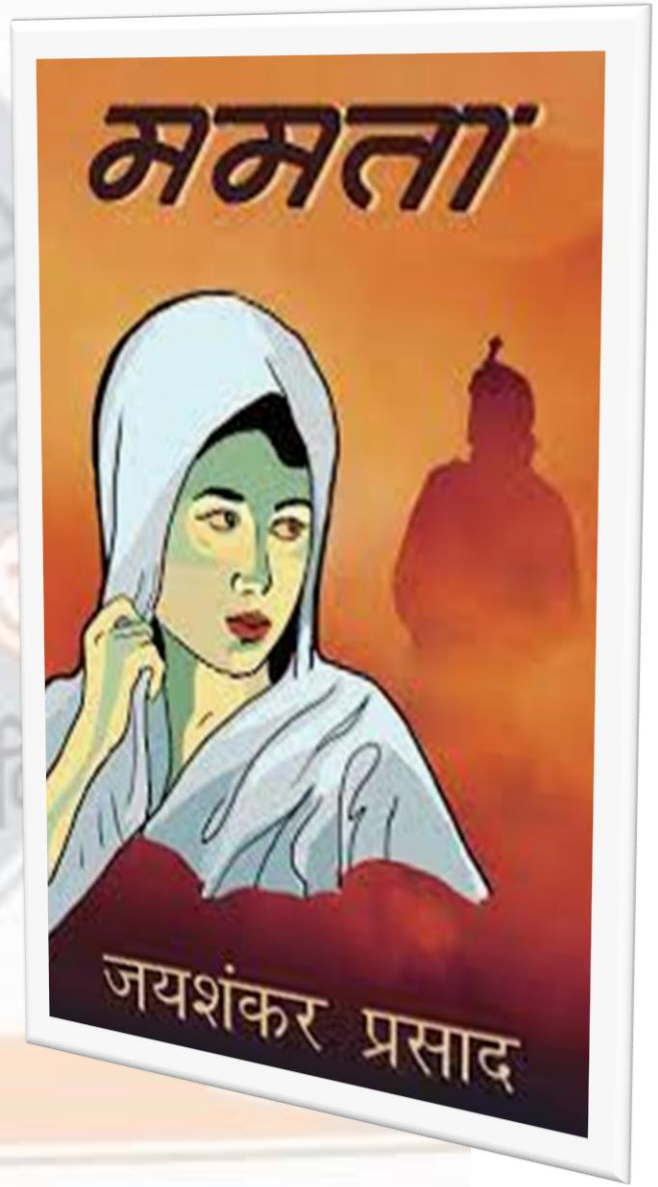

रोहतास - दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी हुई युवती ममता , शोण के तीक्ष्ण गम्भीर प्रवाह को देख रही है । ममता विधवा थी । उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था । मन में वेदना , मस्तक में आँधी , आँखों में पानी की बरसात लिये , वह सुख के कंटक शयन में विकल थी । वह रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की अकेली दुहिता थी , फिर उसके लिए कुछ अभाव होना असम्भव था , परन्तु वह विधवा थी - हिन्दू - विधवा संसार में सबसे निराश्रय प्राणी है- तब उसकी विडम्बना का कहाँ अन्त था ?

चूड़ामणि ने चुपचाप उसके प्रकोष्ठ में प्रवेश किया । शोण के प्रवाह में , उसके कल - नाद में , अपना जीवन मिलाने में वह बेसुध थी । पिता का आना न जान सकी । चूड़ामणि व्यथित हो उठे । स्नेह - पालिता पुत्री के लिए क्या करें , यह स्थिर न कर सकते थे । लौटकर बाहर चले गये । ऐसा प्रायः होता , पर आज मंत्री के मन में बड़ी दुश्चिन्ता थी । पैर सीधे न पड़ते थे । एक पहर बीत जाने पर वे फिर ममता के पास आये । उस समय उनके पीछे दस सेवक चाँदी के बड़े थालों में कुछ लिए खड़े थे । कितने ही मनुष्यों के पद - शब्द सुन ममता ने घूमकर देखा ।

मंत्री ने सब थालों को रखने का संकेत किया । अनुचर थाल रखकर चले गये । ममता ने पूछा– “ यह क्या है पिताजी ? " " तेरे लिए बेटी ! उपहार है । ” – कहकर चूड़ामणि ने उसका आवरण उलट दिया ।1 स्वर्ण का पीलापन उस सुनहली संध्या में विकीर्ण होने लगा । ममता चौंक उठी " इतना स्वर्ण ! यह कहाँ से आया ? " “ चुप रहो ममता , यह तुम्हारे लिए है ! " ममता " तो क्या आपने म्लेच्छ का उत्कोच स्वीकार कर लिया ? पिताजी , यह अनर्थ है , अर्थ नहीं । लौटा दीजिये । पिताजी ! हम लोग ब्राह्मण हैं . इतना सोना लेकर क्या करेंगे ? "

" इस पतनोन्मुख प्राचीन सामन्त - वंश का अन्त समीप है , बेटी ! किसी भी दिन शेरशाह रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है । उस दिन मंत्रित्व न रहेगा , तब के लिए बेटी । " " हे भगवान् ! तब के लिए ! विपद के लिए ! इतना आयोजन ! परमपिता की इच्छा के विरुद्ध इतना साहस ! पिताजी , क्या भीख न मिलेगी ? क्या कोई हिन्दू भू - पृष्ठ पर न बचा रह जायगा , जो ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न दे सके ? यह असम्भव है । फेर दीजिये पिताजी , मैं काँप रही हूँ — इसकी चमक आँखों को अन्धा बना रही है । " " मूर्ख है ' ' — कहकर चूड़ामणि चले गये । दूसरे दिन जब डोलियों का ताँता भीतर आ रहा था , ब्राह्मण मंत्री चूड़ामणि का हृदय धक् - धक् करने लगा ।

वह अपने को रोक न सका । उसने जाकर रोहतास - दुर्ग के तोरण पर डोलियों का आवरण खुलवाना चाहा । पठानों ने कहा “ यह महिलाओं का अपमान करना है । " बात बढ़ गयी । तलवारें खिंची , ब्राह्मण वहीं मारा गया और राजा - रानी और कोष सब छली शेरशाह के हाथ पड़े , निकल गयी ममता । डोली में भरे हुए पठान सैनिक दुर्ग भर में फैल गये , पर ममता न मिली ।

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था । भग्न चूड़ा , तृण - गुल्मों से ढके हुए प्राचीर , ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति , ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी । जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे , उसी स्तूप के भग्नावशेष की मलिन छाया में एक झोंपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी " अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते "

पाठ रुक गया । एक भीषण और हताश आकृति दीप के मन्द प्रकाश में सामने खड़ी थी । स्त्री उठी , उसने कपाट बन्द करना चाहा ; परन्तु उस व्यक्ति ने कहा- “ माता ! मुझे आश्रय चाहिए । " " तुम कौन हो ? ' ' — स्त्री ने पूछा । " मैं मुगल हूँ । चौसा - युद्ध में शेरशाह से विपन्न होकर रक्षा चाहता हूँ । इस रात अब आगे चलने में असमर्थ हूँ । " " क्या शेरशाह से ! " स्त्री ने अपने ओंठ काट लिये । " हाँ , माता ! " " परन्तु तुम भी वैसे ही क्रूर हो , वही भीषण रक्त की प्यास , वही निष्ठुर प्रतिबिम्ब तुम्हारे मुख पर भी है ।

सैनिक ! मेरी कुटी में स्थान नहीं , जाओ कहीं दूसरा आश्रय खोज लो ! " " गला सूख रहा है , साथी छूट गये हैं , अश्व गिर पड़ा है — इतना थका हुआ हूँ , इतना ! ' - कहते - कहते वह व्यक्ति धम से बैठ गया और उसके सामने ब्रह्माण्ड घूमने लगा । स्त्री ने सोचा , यह विपत्ति कहाँ से आयी । उसने जल दिया , मुगल के प्राणों की रक्षा हुई । वह सोचने लगी- " सब विधर्मी दया के पात्र नहीं — मेरे पिता का वध करनेवाले आततायी ! ' घृणा से उसका मन विरक्त हो गया ।

स्वस्थ होकर मुगल ने कहा- " माता ! तो फिर मैं चला जाऊँ ? " स्त्री विचार कर रही थी— " मैं ब्राह्मणी हूँ , मुझे तो अपने धर्म अतिथि - देव की उपासना का पालन करना चाहिए , परन्तु यहाँ ..... .नहीं - नहीं , सब विधर्मी दया के पात्र नहीं । परन्तु यह दया तो नहीं ..... कर्तव्य करना है । तब ? " मुगल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ । ममता ने कहा— " क्या आश्चर्य है कि भी छल करो ; ठहरो । " " छल ! नहीं तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ , तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ । भाग्य का खेल है । " ममता ने मन में कहा— " यहाँ कौन दुर्ग है !

यही झोंपड़ी न , जो चाहे ले ले , मुझे अपना कर्त्तव्य करना पड़ेगा । " वह बाहर चली आयी और मुगल से बोली- “ जाओ भीतर , थके हुए भयभीत पथिक । तुम चाहे कोई हो , मैं तुम्हें आश्रय देती हूँ । मैं ब्राह्मण - कुमारी हूँ , सब अपना धर्म छोड़ दें , तो मैं भी क्यों छोड़ दूँ ? " मुगल ने चन्द्रमा के मन्द प्रकाश में वह महिमामय मुखमण्डल देखा , उसने मन - ही - मन नमस्कार किया । ममता पास की टूटी हुई दीवार में चली गयी । भीतर , थके पथिक ने झोंपड़ी में विश्राम किया ।

प्रभात में खंडहर की सन्धि से ममता ने देखा , सैकड़ों अश्वारोही उस प्रान्त में घूम रहे हैं । वह अपनी मूर्खता पर अपने को कोसने लगी । अब उस झोंपड़ी से निकलकर उस पथिक ने कहा— " मिरजा । मैं यहाँ हूँ । " शब्द सुनते ही प्रसन्नता की चीत्कार - ध्वनि से वह प्रान्त गूंज उठा । ममता अधिक भयभीत हुई । पथिक ने कहा— " वह स्त्री कहाँ है ? उसे खोज निकालो । " ममता छिपने के लिए अधिक सचेष्ट हुई । वह मृग - दाव में चली गयी । दिनभर उसमें से न निकली । सन्ध्या में जब उन लोगों के जाने का उपक्रम हुआ , तो ममता ने सुना , पथिक घोड़े पर सवार होते हुए कह रहा है " मिरजा ! उस स्त्री को मैं कुछ दे न सका ।

उसका घर बनवा देना ; क्योंकि मैंने विपत्ति में यहाँ विश्राम पाया था । यह स्थान भूलना मत । " इसके बाद वे चले गये । चौसा के मुगल - पठान - युद्ध को बहुत दिन बीत गये । ममता अब सत्तर वर्ष की वृद्धा है । वह अपनी झोंपड़ी में एक दिन पड़ी थी । शीतकाल का प्रभात था । उसका जीर्ण कंकाल खाँसी से गूंज रहा था । ममता की सेवा के लिए गाँव की दो - तीन स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठी थीं ; क्योंकि वह आजीवन सबके दुःख - सुख की सहभागिनी रही

ममता ने जल पीना चाहा , एक स्त्री ने सीपी से जल पिलाया । सहसा एक अश्वारोही उसी झोंपड़ी के द्वार पर दिखायी पड़ा । वह अपनी धुन में कहने लगा— " मिरजा ने जो चित्र बनाकर दिया है , वह तो इसी जगह का होना चाहिए । वह बुढ़िया मर गयी होगी , अब किससे पूछू कि एक दिन शहंशाह हुमायूँ किस छप्पर के नीचे बैठे थे ? यह घटना भी तो सैंतालीस वर्ष से ऊपर की हुई ! "

ममता ने अपने विकल कानों से सुना । उसने पास की स्त्री से कहा- " उसे बुलाओ । " अश्वारोही पास आया । ममता ने रुक - रुककर कहा- " मैं नहीं जानती कि वह शहंशाह था या साधारण मुगल ; पर एक दिन इसी झोंपड़ी के नीचे वह रहा । मैंने सुना था कि वह मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे चुका था । मैं आजीवन अपनी झोंपड़ी के खोदे जाने के डर से भयभीत रही ।

भगवान् ने सुन लिया , मैं आज इसे छोड़े जाती हूँ । तुम इसका मकान बनाओ या महल , मैं अपने चिर - विश्राम - गृह में जाती हूँ ! " वह अश्वारोही अवाक् खड़ा था । बुढ़िया के प्राण - पक्षी अनन्त में उड़ गये । वहाँ एक अष्टकोण मन्दिर बना और उस पर शिलालेख लगाया गया " सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था । उसके पुत्र अकबर ने उसकी स्मृति में यह गगनचुम्बी मन्दिर बनवाया । " पर उसमें ममता का कहीं नाम नहीं ।

-जयशंकर प्रसाद

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या
अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात्
मुक्तिः
* ||ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् || *